राजेंद्र यादव के संपादकीय : विचार एवं प्रस्तुति

सावन कुमार

राजेंद्र यादव के संपादकीय लेखन की एक खास विशेषता है उनका बेबाकपन। वे न तो सत्ता की शक्तियों से डरते हैं न कठमुल्लाओं और पोगा.पंथियों की हरकतों से, न हंस के दुश्मनों और विरोधियों की भर्त्सना से। उन्होंने पार्टी, व्यक्ति या संस्था आदि को नहीं बल्कि मुद्दों को सामने रखा है लेकिन इन मुद्दों में शामिल दोषी लोगों को उन्होंने बिना किसी डर के लताड़ा है। राममंदिर और गुजरात दंगों पर आडवाणी, वाजपेयी और जोशी की जमकर खबर लेते हैं तो कागज के दाम बढ़ाए जाने और पटना आकाशवाणी के अधिकारियों को निलंबित करने पर राजीव गाँधी को अनपढ़, जाहिल और अयोग्य तक कह डालते हैं। उनके निशाने पर भाजपा और कांग्रेस एक समान रूप से रहती हैं। यादव जी के संपादकीय लेखन में भक्ति या अंधभक्ति का तो सवाल ही नहीं उठता है, विरोध भी अंधविरोध जैसा कहीं प्रतीत नहीं होता। वे व्यक्ति विशेष का विरोध या समर्थन करने के बजाय उसके विचारों और कारनामों का विरोध करते हैं। सरकार द्वारा इंडियन एक्सप्रेस पर प्रतिबंध लगाए जाने पर वे इसकी भर्त्सना जरूर करते हैं पर इंडियन एक्सप्रेस की गलत नीतियों का समर्थन कभी नहीं करते। उन्होंने हंस को कभी भी व्यक्तिगत दुश्मनी का मंच बनाकर अपनी कुंठा, विरोध आदि को जताने का साधन नहीं बनाया। इसी बेबाकपन के कारण राजेंद्र जी के संपादकीय कई बार विवाद को जन्म देने लगे।